myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र

इतिहास

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश :

(1) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिये गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने लिखे हैं।

(2) 2 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (खण्ड 'क' – प्रश्न सं. 1 से 3) 30 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(3) 5 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (खण्ड 'ख' – अनुभाग I से IV – प्रश्न सं. 4 से 11) 100 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(4) 10 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (खण्ड 'ग' – प्रश्न सं. 12 एवं 13) 350 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(5) खंड 'घ' के प्रश्न तीन स्रोतों पर आधारित हैं।

(6) मानचित्र अपनी उत्तर–पुस्तिका के साथ संलग्न कीजिए (खण्ड 'ङ')।

खण्ड 'क'

निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हड़प्पा बस्तियों के विभाजित दो भागों के नाम व उनकी किसी एक मुख्य विशेषता का उल्लेख कीजिए। 2

2. बर्नियर ने मुग़ल शासन के अंतर्गत शिल्पकारों की जटिल सामाजिक वास्तविकता का वर्णन किस प्रकार किया है? कोई एक कारण स्पष्ट कीजिए। 2

3. हिल स्टेशनों की स्थापना क्यों की गई? स्पष्ट कीजिए। 2

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

खण्ड 'ख'

भाग - I

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

4. "मोहनजोदड़ो का सबसे अनूठा पहलू शहरी केन्द्रों का विकास था।" इस कथन की उदाहरणों सहित पुष्टि कीजिए। 5
5. 'मनुस्मृति' में दिए चाण्डालों के कर्तव्यों की समालोचना कीजिए। 5
6. बुद्ध की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए। 5

भाग - II

निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :

7. "कृष्णदेव राय के शासन की चारित्रिक विशेषता विस्तार और सुदृढ़ीकरण थी।" इस कथन का, साक्ष्यों के आधार पर, औचित्य निर्धारित कीजिए। 5
8. सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दियों में ग्राम पंचायतों के कार्यों का वर्णन कीजिए। 5

भाग - III

निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :

9. 1861 में अमेरिका में गृहयुद्ध छिड़ने से भारतीय किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा? व्याख्या कीजिए। 5
10. उन साक्ष्यों के बारे में चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि विद्रोही योजनाबद्ध और समन्वित ढंग से काम कर रहे थे? 5

भाग - IV

दिए गए 'मूल्य आधारित' अनुच्छेद को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

11. मुगल इतिवृत्त साम्राज्य को हिन्दुओं, जैनों, ज़रतुश्तियों और मुसलमानों जैसे अनेक भिन्न-भिन्न नृजातीय और धार्मिक समुदायों को समाविष्ट किए हुए साम्राज्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। सभी तरह की शांति और स्थायित्व के स्रोत के रूप में बादशाह सभी धार्मिक और नृजातीय समूहों से ऊपर होता था, इनके बीच मध्यस्थता करता था

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

तथा यह सुनिश्चित करता था कि न्याय और शांति बनी रहे। अबुल फ़ज़्ल सुलह-ए-कुल (पूर्ण शंति) के आदर्श को प्रबुद्ध शासन की आधार शिला बताता है।

(1) मुगलों के अधीन अभिजात वर्ग की संरचना स्पष्ट कीजिए तथा यह भी बतायें कि उनके पद किस बात पर निर्भर करते थे? 2

(2) वर्तमान काल में सुलह-ए-कुल की अवधारणा भारत की पंथ-निरपेक्षता के संदर्भ में कहाँ तक सार्थक की जा सकती है? स्पष्ट कीजिए। 3

खण्ड 'ग'

12. विजय नगर की भौगोलिक स्थिति के विषय में चौंकाने वाले तथ्य, इसकी जल संपदा तथा किलेबन्दियों की व्याख्या कीजिए। 10

अथवा

मुग़ल कालीन भारत में पांडुलिपियों की रचना किस प्रकार की जाती थी? स्पष्ट कीजिए।

13. असहयोग आंदोलन के कारण व इसके भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान की समीक्षा कीजिए। गाँधी जी ने ख़िलाफ़त को इसके साथ क्यों जोड़ा? स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

भारत का बँटवारा एक सांप्रदायिक राजनीति का आखिरी बिंदु कैसे था जो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में शुरू हुआ? स्पष्ट कीजिए।

खण्ड 'घ'

स्रोत आधारित प्रश्न

निम्नलिखित अनुच्छेदों (प्रश्न सं. 14-16) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उनके अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

14. **सीमाओं का महत्व**

मनुस्मृति आरंभिक भारत का सबसे प्रसिद्ध विधिग्रंथ है। इसे संस्कृत भाषा में दूसरी शताब्दी ई. पू. और दूसरी शताब्दी ई. के बीच लिखा गया था। इस ग्रंथ में राजा को यह

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

सलाह दी गई है :

चूँकि सीमाओं की अनभिज्ञता के कारण विश्व में बार-बार विवाद पैदा होते हैं इसलिए उसे सीमाओं की पहचान के लिए गुप्त निशान जमीन में गाड़ कर रखने चाहिए जैसे कि पत्थर, हड्डियाँ, गाय के बाल, भूसी, राख, खपटे, गाय के सूखे गोबर, ईंट, कोयला, कंकड़ और रेत। उसे सीमाओं पर इसी प्रकार के और तत्व भूमि में छुपाकर गाड़ने चाहिए, जो समय के साथ अपक्षय नहीं होते।

(1) विश्व में बार-बार सीमा विवाद क्यों पैदा होते हैं? स्पष्ट कीजिए। 2

(2) सीमा समस्याओं को सुलझाने के रास्तों को स्पष्ट कीजिए। 3

(3) क्या भारत इस समय किसी सीमा समस्या का सामना कर रहा है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

स्वजन के मध्य लड़ाई क्यों हुई?

यह उद्धरण संस्कृत महाभारत के आदिपर्वन् (प्रथम अध्याय) से है और कौरव पांडव के बीच हुए संघर्ष का चित्रण करता है :

कौरव धृतराष्ट्र के पुत्र थे और पांडव उनके बांधव जन थे। चूँकि धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे अतः उनके अनुज पांडु हस्तिनापुर के सिंहासन पर आसीन हुए। किंतु पांडु की असामयिक मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र राजा बने, क्योंकि सभी राजकुमार अल्पवयस्क थे। जैसे-जैसे राजकुमार बड़े हुए हस्तिनापुर के नागरिक पांडवों के प्रति अपनी अभिरुचि व्यक्त करने लगे क्योंकि वे कौरवों के मुकाबले अधिक योग्य और सदाचारी थे। इस बात से कौरवों में ज्येष्ठ, दुर्योधन को बहुत ईर्ष्या हुई। वह अपने पिता के पास गया और बोला, "हे भूपति, अपूर्णता के कारण आपको सिंहासन पर बैठने का अधिकार नहीं था हालाँकि यह आपको प्राप्त हो गया। यदि पांडव पांडु से यह विरासत प्राप्त करते हैं तो उनके बाद उनके पुत्र, पौत्र और फिर प्रपौत्र इस पैतृक संपत्ति के अधिकारी हो जाएँगे और हम तथा हमारे पुत्र इस राज्य के उत्तराधिकार से बेदखल होकर संसार में क्षुद्र समझे जाएँगे।"

इस तरह के उद्धरण अक्षरशः सत्य न भी हों तो भी वे इस बात का अनुमान करा देते हैं कि जिन लोगों ने यह ग्रंथ लिखा वे क्या सोचते थे। कभी-कभी, जैसे यहाँ प्रकरणों में

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

परस्पर विरोधी विचार मिलते हैं।

(1) हस्तिनापुर के नागरिक पांडवों के प्रति अपनी अभिरुचि क्यों व्यक्त करने लगे? 2

(2) पांडवों के प्रति दुर्योधन की प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए। 3

(3) पितृवंशिक उत्तराधिकार के आधार की व्याख्या कीजिए। 3

15. **देहली**

चित्र : तुग़लकाबाद, दिल्ली का एक मेहराब।

दिल्ली, जिसे तत्कालीन ग्रंथों में अक्सर देहली नाम से उद्धृत किया गया था, का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है :

दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला घनी जनसंख्या वाला शहर है। शहर के चारों ओर बनी प्राचीर अतुलनीय है, दीवार की चौड़ाई ग्यारह हाथ (एक हाथ लगभग 20 इंच के बराबर) है; और इसके भीतर रात्रि के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष हैं। प्राचीरों के अदर खाद्यसामग्री, हथियार, बारूद, प्रक्षेपास्त्र तथा घेरेबंदी में काम आने वाली मशीनों के संग्रह के लिए भंडारगृह बने हुए थे। प्राचीर के भीतरी भाग में घुड़सवार तथा पैदल सैनिक शहर के एक से दूसरो छोर तक आते-जाते हैं। प्राचीर में खिड़कियाँ बनी हैं जो शहर की ओर खुलती हैं और इन्हीं खिड़कियों के माध्यम से प्रकाश अंदर आता है। प्राचीर का निचला भाग पत्थर से बना है जबकि ऊपरी भाग ईंटों से। इसमें एक-दूसरे के पास-पास बनी कई मीनारें हैं। इस शहर के अट्ठाईस द्वार हैं जिन्हें दरवाज़ा कहा जाता है और इनमें से बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल है; मांडवी दरवाजे के भीतर एक अनाज मंडी है; गुल दरवाजे की बगल में एक फलों का बगीचा है। इस (देहली शहर) में बनी कब्रों पर गुंबद नहीं है उनमें

चित्र : बस्ती की किलेबंदी की दीवार का एक हिस्सा।

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

निश्चित रूप से मेहराब है। कब्रगाह में कंदाकार चमेली तथा जंगली गुलाब जैसे फूल उगाए जाते हैं; और फूल सभी मौसमों में खिले रहते हैं।

(1) उप-महाद्वीप के नगरों का वर्णन इब्न बतूता ने किस प्रकार किया है? 2

(2) उसके द्वारा दिल्ली का दिया गया विवरण क्या था? 4

(3) आज की दिल्ली में आए किन्हीं चार परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए। 2

अथवा

एक ईश्वर

यह रचना कबीर की मानी जाती है :

हे भाई यह बताओ, किस तरह हो सकता है
कि संसार के एक नहीं दो स्वामी हों?
किसने तुम्हें भ्रमित किया है?
ईश्वर को अनेक नामों से पुकारा जाता है : जैसे अल्लाह, राम, करीम, केशव, हरि तथा हजरत।
विभिन्नताएँ तो केवल शब्दों में हैं जिनका आविष्कार हम स्वयं करते हैं।
कबीर कहते हैं दोनों ही भुलावे में हैं।
इनमें से कोई एक राम को प्राप्त नहीं कर सकता।
एक बकरे को मारता है और दूसरा गाय को।
वे पूरा जीवन विवादों में ही गँवा देते हैं।

(1) जो कबीर की बानी मानी जाती है, वह किन ग्रंथों में संकलित हैं? किन्हीं दो के नाम लिखिए। 2

(2) कबीर ने 'परम सत्य' को किस प्रकार वर्णित किया है? 2

(3) उन्होंने विभिन्न संप्रदायों के संसार के स्वामियों के प्रति क्या तर्क दिए, उनकी व्याख्या कीजिए। 2

(4) क्या आप कबीर के विचारों से सहमत हैं? आप अपने विचार भी प्रस्तुत कीजिए। 2

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

16. **पाँचवीं रिपोर्ट से उद्धृत**

जमींदारों की हालत और जमीनों की नीलामी के बारे में पाँचवीं रिपोर्ट में कहा गया है :

राजस्व समय पर नहीं वसूल किया जाता था और काफ़ी हद तक जमीनें समय-समय पर नीलामी पर बेचने के लिए रखी जाती थीं। स्थानीय वर्ष 1203, तदनुसार सन् 1796-97 में बिक्री के लिए विज्ञापित जमीन की निर्धारित राशि (जुम्मा) 28,70,061 सिक्का रु. थी और वह वास्तव में 17,90,416 रु. में बेची गई और 14,18,756 रु. की राशि जुम्मा के रूप में प्राप्त हुई। स्थानीय संवत 1204, तदनुसार सन् 1797-98 में 26,66,191 सिक्का रु. के लिए जमीन विज्ञापित की गई। 22,74,076 सिक्का रु. की ज़मीन बेची गई और क्रय राशि 21,47,580 सिक्का रु. थी। बाकीदारों में कुछ लोग देश के बहुत पुराने परिवारों में से थे। ये थे : नदिया, राजशाही, बिशनपुर (सभी बंगाल के ज़िले) आदि के राजा। साल दर साल उनकी जागीरों के टूटते जाने से उनकी हालत बिगड़ गई उन्हें ग़रीबी और बरबादी का सामना करना पड़ा और कुछ मामलों में तो सार्वजनिक निर्धारण की राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को भी काफी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं।

(1) पाँचवीं रिपोर्ट के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 2

(2) उक्त रिपोर्ट के संदर्भ में भारतीय ज़मींदारों की अवस्था स्पष्ट कीजिए। 3

(3) "पाँचवीं रिपोर्ट में परंपरागत ज़मींदारों की सत्ता के पतन का वर्णन अतिरंजित है।" इस कथन के समर्थन के दीजिए। 3

अथवा

असामान्य समय में सामान्य जीवन

विद्रोह के महीनों में शहरों में क्या हुआ? उथल-पुथल के उन दिनों में लोग अपनी जिंदगी कैसे जी रहे थे? सामान्य जीवन किस तरह प्रभावित हुआ? विभिन्न शहरों की रिपोर्टों से पता चलता है कि सामान्य गतिविधियाँ अस्त-व्यस्त हो गई थीं। दिल्ली उर्दू अख़बार, 14 जून 1857 की इन रिपोर्टों को पढ़िए :

यही हालत सब्जियों और साग (पालक) के भी हैं। लोग इस बात पर शिकायत कर रहे हैं कि बाज़ारों में कद्दू और बैंगन तक नहीं मिलते। आलू और अरबी अगर मिलती भी हैं तो बासी, सड़ी जिसे कुँजड़ों (सब्जी बेचने वाले) ने रोक कर

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

(जमाकर) रखा हुआ था। शहर में स्थित बाग-बगीचों से कुछ माल चंद इलाकों तक पहुँच जाता है लेकिन ग़रीब और मध्यवर्ग वाले उन्हें देखकर बस होठों पर जीभ फिरा कर रह जाते हैं (क्योंकि वे चीज़ें खास लोगों के लिए ही हैं)।

यहाँ एक और चीज़ पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे लोगों को बड़ा नुकसान हो रहा है। मामला यह है कि पानी भरने वालों ने पानी भरना बंद कर दिया है। गरीब शुरफा (कुलीन लोग) खुद घड़ों में पानी भरकर लाते हैं और तब जाकर घर में खाना बनता है। हलालख़ोर हरामख़ोर हो गए हैं। कई दिनों में बहुत सारे मोहल्लों में कोई आमदनी नहीं हुई है और यही हालात बने रहे तो गंदगी, मौत और बीमारियाँ शहर की आबो-हवा खराब कर देंगी और शहर महामारी की गिरफ़्त में आ जाएगा, यहाँ तक कि आस-पास के इलाक़े भी उसकी चपेट में आ जाएँगे।

(1) 1857 के विद्रोह के महीनों में दिल्ली शहर में क्या हुआ था? स्पष्ट कीजिए। 2

(2) उथल-पुथल के उन दिनों में लोग अपनी जिंदगी किस प्रकार जी रहे थे? 3

(3) लोगों की सामान्य दैनिक जीवन की गतिविधियाँ किस प्रकार अस्त-व्यस्त हुईं? स्पष्ट कीजिए। 3

खण्ड 'ङ'

17. भारत के दिए गए रेखा मानचित्र पर :

(अ) 1857 के विद्रोह के तीन महत्वपूर्ण स्थान 1, 2, 3 अंकित किए गए हैं। उन्हें पहचानिए और उनके नाम उनके समीप खींची गई रेखा पर लिखिए। 3

(ब) मगध और बीजापुर को उपरोक्त मानचित्र पर चिह्नित कीजिए और उनके नाम लिखिए। 2

18. निर्देश : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिहीन परीक्षार्थियों के लिए मानचित्र संख्या 17 के स्थान पर है।

(अ) किसी एक महत्वपूर्ण विकसित हड़प्पा पुरास्थल का नाम लिखिए।

(ब) बाबर, अकबर और औरंगज़ेब के अधीन किसी एक राज्य/नगर का नाम लिखिए।

(स) भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के किसी एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र का नाम लिखिए।

(द) किसी एक महाजनपद का नाम लिखिए।

(य) हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित साम्राज्य का नाम लिखिए। 5

myCBSEguide.com
A Complete guide for CBSE students

भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)
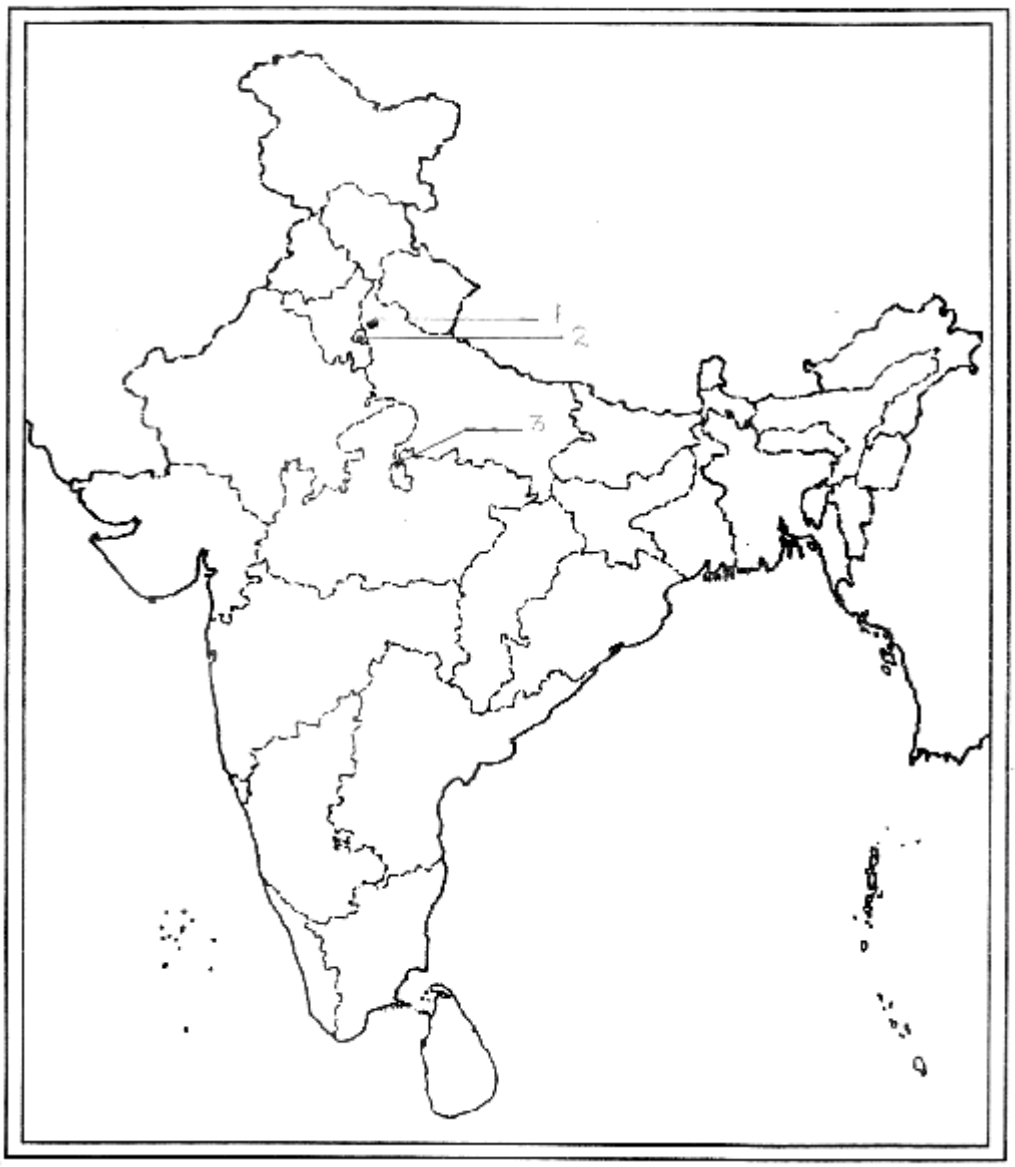
Outline Map of India (Political)